हिन्दी

अलंकार

Hindi by Navneet Sir

शब्दालंकार :-

जहाँ शब्द विशेष के कारण साहित्य में चमत्कार / सौन्दर्य बढ़ता और उसे स्थान पर उसका पर्यायवाची लगा देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है उसे शब्द अलंकार कहते हैं

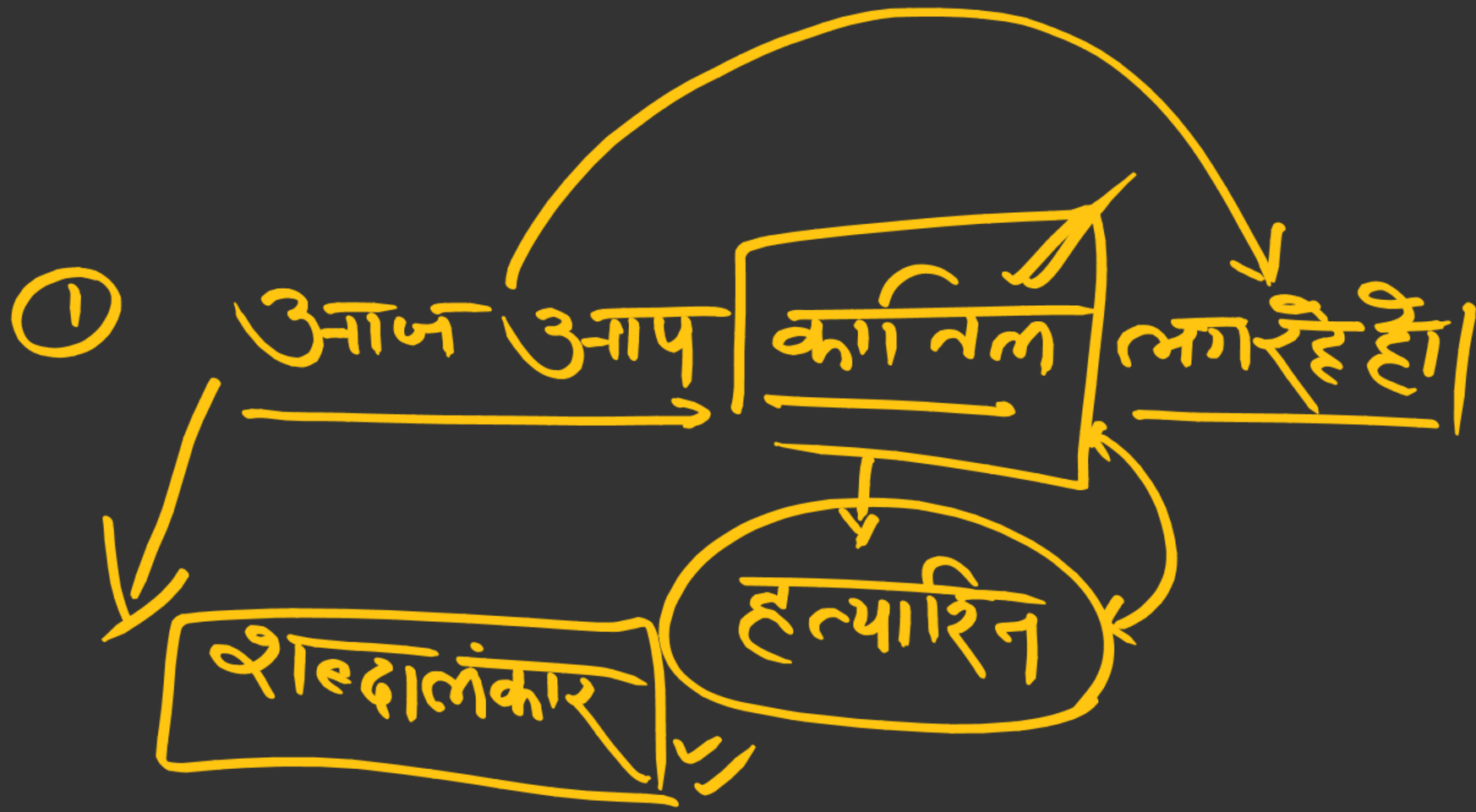
①
आज आप कानिल लगा रहे हो।
हत्याहिन
शब्दालंकार

⇒ आज आप ने मुख क्यों लटका रखा है

अनुप्रास अलंकार

आवृत्ति अनु + प्रास - वर्ण

↳ जहाँ एक या एक से अधिक वर्ण की आवृत्ति (दोहराव) हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है

⇒ **वृत्यानुप्रास अलंकार :-**

⇒ जिस अलंकार में एक ही व्यंजन वर्ण की अनेक बार आवृत्ति होती है। उसे वृत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं

खोल दे पंख मेरे
कहता है परिंदा,
अभी और उड़ान बाकी है,
जमीन नहीं है मंजिल मेरी,
अभी पूरा आसमान बाकी है ।

अलंकार

अलंकार ट्रिक

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के चार भेद

- शब्दालंकार
- अर्थालंकार
- उभयालंकार
- पाश्चात्य अलंकार

शब्दालंकार

शब्दालंकार वें अलंकार है, जहाँ शब्द विशेष के ऊपर अलंकार की निर्भरता हो। शब्दालंकार में शब्द विशेष के प्रयोग के कारण ही कोई चमत्कार उत्पन्न होता है, उन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है।

जैसे-

1. वह बाँसुरी की धुनि कानि परै,कुल-कानि हियो तजि भाजति है।
2. **भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही**

शब्दालंकार

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं

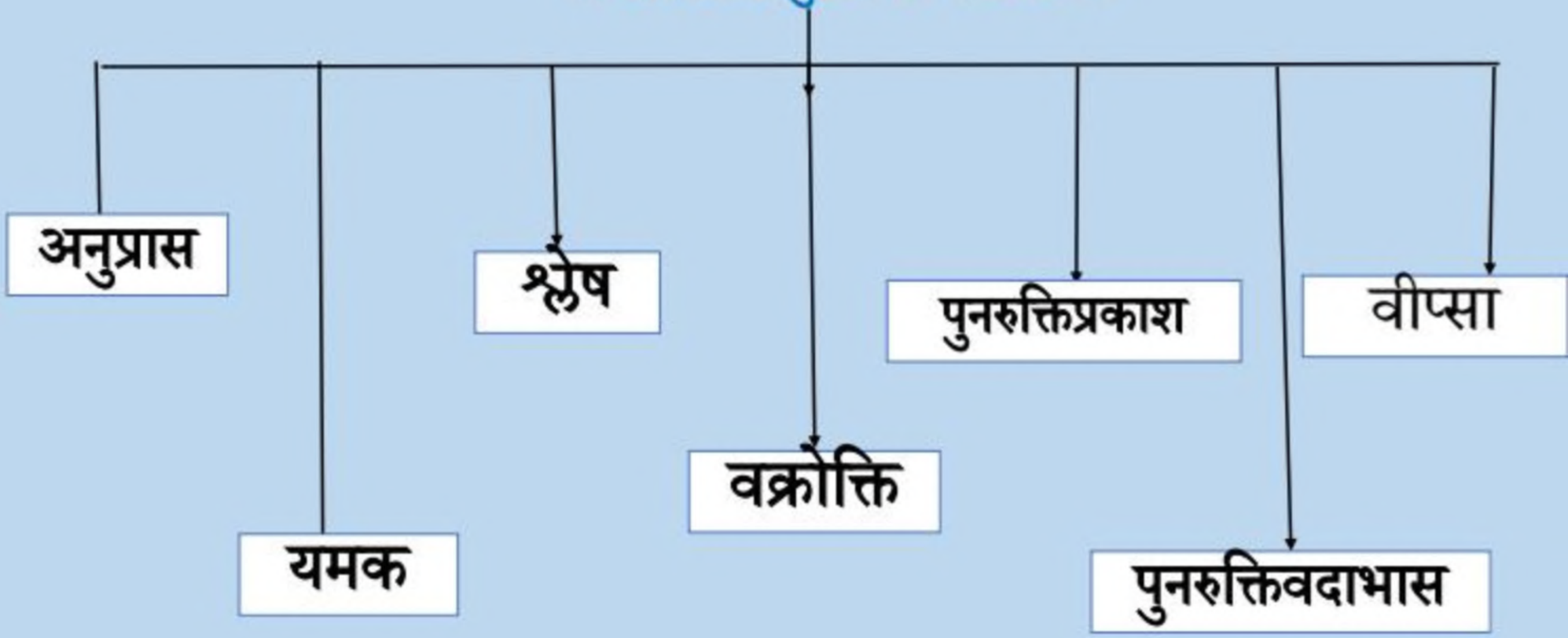

अनुप्रास अलंकार

जिस रचना में व्यंजनों की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमंत बुलाये।।

इस चौपाई में पूर्व में **म** की और उत्तर में **स** की तीन-तीन बार आवृत्ति हुई है, पर इनमें स्वरों का मेल नहीं है। कहीं-कहीं स्वर भी मिल जाते हैं;

जैसे -सो सुख सुजस सुलभ मोहिं स्वामी।

इसमें **स** की आवृत्ति पाँच बार हुई है, पर स्वरों का मेल (सुख, सुजस, सुलभ) केवल तीन बार हुआ है।

जैसे - 'सुरभित सुन्दर सुखद सुमन तुम पर खिलते हैं।'

इस काव्य-पंक्ति में पास-पास प्रयुक्त **'सुरभित'**, **'सुन्दर'**, **'सुखद'** और **'सुमन'** शब्दों में **'स'** वर्ण की आवृत्ति हुई है।

शब्दालंकार

वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहते हैं

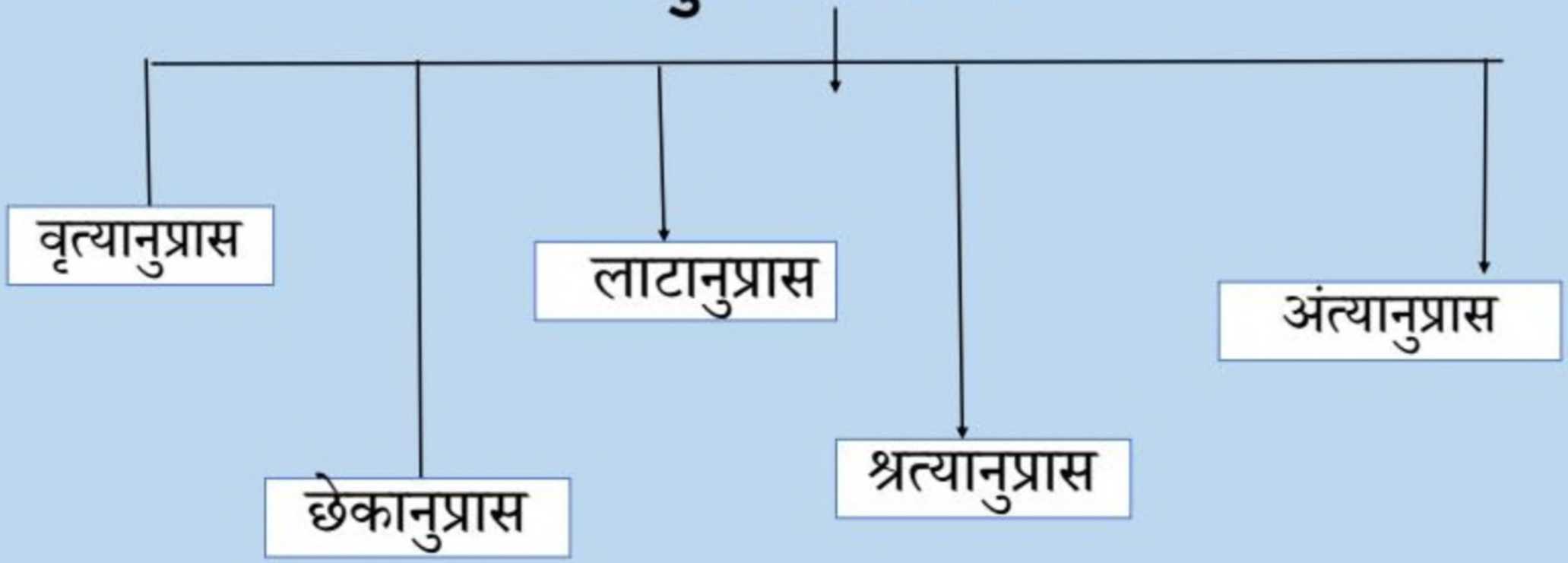

वृत्यानुप्रास

अनेक व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ वृत्यनुप्रास होता है

एक व्यंजन की अनेक बार आवृत्ति के द्वारा-

सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा।।

एक स की अनेक बार आवृत्ति

बिधिनिषेधमय कलिमल हरनी। करम कथा रबिनन्दिनी बरनी।

यहाँ 'र' 'ब'

उस प्रमदा के अलकदाम से मादक सुरभि निकलती।

मद, दम, मद में अनेक व्यजनों की अनेक बार

छेकानुप्रास

अनेक व्यंजनों की एक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति

छेक का अर्थ है वाक्-चातुर्य। अर्थात् वाक् से परिपूर्ण एक या एकाधिक वर्णों की आवृत्ति को **छेकानुप्रास** कहा जाता है।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

यहाँ अनेक व्यंजनों-'पद' 'पदुम' में प, द और 'सुरुचि' 'सरस' में स, र की स्वरूपतः और क्रमतः एक बार आवृत्ति है

इस करुणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती है।

उपरोक्त पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति क्रम से एक बार है

लाटानुप्रास अलंकार:-

जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवृति उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। यह यमक का ठीक उलटा है। इसमें मात्र शब्दों की आवृत्ति न होकर तात्पर्य मात्र के भेद से शब्द और अर्थ दोनों की आवृत्ति होती है

1. "रामभजन जो करत नहिं, भव- बंधन- भय ताहि।
रामभजन जो करत नहिं, भव-बंधन-भय ताहि।।"

1. पंकज तो पंकज, मृगांक भी है मृगांक री प्यारी।
मिली न तेरे मुख की उपमा देखी वसुधा सारी।।